विचार बिन्दु

आनंद वह ख़ुशी है जिसके भोगने पर पछताना नहीं पड़ता। –सुकरात

मौजूदा दौर में बीच की राह किसी को नहीं भाती

दुनिया में सब कुछ एकदम स्याह या सफेद नहीं होता। दो सिरों के बीच बहुत सी छायाएं – शेड्स – होती है। प्रकृति ने भी हमें आंखें दी हैं जिनसे हम अनेक रंगों और उनकी अनगिनत छायाओं (शेड्स) को देखते हैं। जीवन की समूची वास्तविकता भी इसी बहुरंगी कैनवास पर टिकी है। दो छोरों के बीच एक बहुत बड़ा, विस्तृत और विचारशील ग्रे ज़ोन (धूसर क्षेत्र) होता है, जहां संवाद, असहमति, समीक्षा और सुधार की गुंजाइश होती है। लेकिन आज का भारतीय सामाजिक-राजनीतिक माहौल इस खूबसूरत जटिलता को ध्वस्त करने पर आमादा है। वर्तमान ध्रुवीकृत माहौल में वैचारिक बारीकियों और संतुलन के लिए जगह लगातार सिकुड़ती जा रही है। आज की दुनिया आपसे मांग करती है कि आपको किसी न किसी की तरफ होना ही पड़ेगा। बीच का कोई रास्ता नहीं। मध्यमार्ग पर चलने वालों, निष्पक्ष रहने वालों या दोनों पक्षों के गुण-दोष के आधार पर बात करने वालों के लिए यह दौर मुश्किल का समय साबित हो रहा है। आज के माहौल में आप नहीं कह सकते कि मैं दोनों से असहमत हूं। आप नहीं कह सकते कि मुझे अमुक की कुछ चीजें पसंद है तो उसकी कुछ चीजें नापसंद भी हैं। ऐसी बातें करने वाला सबके लिये त्याज्य हो जाता है। यह द्वि-आधारी याने बाइनरीसोच का संकट है। हम पाते हैं कि भारतीय समाज में सब कुछ किसी चश्मे से देखने की प्रवृत्ति हावी हो चुकी है। यदि कोई अमुक विचारधारा के साथ नहीं है, तो मान लिया जाता है कि वह अनिवार्य रूप से उसके विरोधी खेमे में शामिल हैं। यह सोच तार्किकता की बुनियादी जड़ों पर प्रहार करती है। एक स्वस्थ और परिपक्व इंसान के रूप में, प्रत्येक के पास यह बौद्धिक स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह कह सके: "मुझे इस व्यवस्था की आर्थिक नीतियां पसंद हैं, लेकिन इसकी सामाजिक नीतियों से मैं असहमत हूं।" या फिर, "विपक्ष का यह विरोध सही है, लेकिन उनका वह विकल्प गलत है।" किन्तु आज का ध्रुवीकृत नैरेटिव इस विवेक की अनुमति नहीं देता। जैसे ही कोई किसी पक्ष की किसी एक बात की सराहना करता है, दूसरा पक्ष उसे तुरंत बिका हुआ, गद्दार या अंधभक्त घोषित कर देता है। वहीं, जब कोई उसी पक्ष की किसी अन्य नीति की आलोचना करता हैं, तो पहले वाले खेमे के लिए वह रातों-रात विरोधी और दुश्मन बन जाता है। यह इस दौर की सबसे बड़ी त्रासदी है कि आप अपनी निष्पक्षता के कारण किसी के सगे नहीं रह जाते। आप सबके लिए त्याज्य हो जाते हैं। यह सोशल मीडिया और इको चैंबर का कुचक्र है। इस ध्रुवीकरण को हवा देने में आधुनिक तकनीक और डिजिटल मीडिया के एल्गोरिदम की भूमिका सबसे घातक रही है। ट्विटर (एक्स), फेसबुक और यूट्यूब जैसे मंचों को इस तरह डिज़ाइन किया गया है कि वे लोगों की पसंद-नापसंद को पहचानकर उन्हें वैसी ही सामग्री दिखाते हैं, जिसे वे देखना चाहते हैं। इसे तकनीकी भाषा में इको चैंबर (प्रतिध्वनि कक्ष) कहा जाता है। इन कक्षों में लोगों को केवल अपनी ही राय से मिलती-जुलती आवाजें सुनाई देती हैं, जिससे उनका यह भ्रम पक्का हो जाता है कि केवल वे ही सही हैं और जो उनसे अलग सोचते हैं, वह मूर्ख है या दुष्ट है। इन मंचों पर जटिल मुद्दों को 280 अक्षरों के ट्वीट या 30 सेकंड के रील्स में समेट दिया जाता है। जहां जटिलता को समझने का धैर्य ही न बचा हो, वहां शेड्स कैसे दिखाई देंगे? वहां तो केवल चीख-पुकार, ट्रोलिंग और सीधे तौर पर लेबलिंग याने ठप्पा लगाना ही बचता है। मध्यमार्गी विचारक जब इन मंचों पर कोई संतुलित बात रखता है, तो दोनों तरफ की उठा भीड़ उस पर टूट पड़ती है। परिणाम यह होता है कि समझदार और संतुलित लोग चुप हो जाते हैं, और पूरा विमर्श दोनों छोरों के उग्रपंथियों के हाथ में चला जाता है।

इस माहौल का एक और दुखद पहलू यह भी है कि यदि आप किसी एक खेमे का झंडा उठाकर नहीं चल रहे हैं, तो आपको विचारहीन या रीढ़विहीन मान लिया जाता है। यह धारणा बना दी गई है कि एक प्रबुद्ध नागरिक वही है जिसकी हर मुद्दे पर एक कड़क, चरम और अपरिवर्तनीय राय हो। जो व्यक्ति संशय में है, जो तथ्यों को तौल रहा है, जो कह रहा है कि "मुझे इस विषय पर और पढ़ने और सोचने की ज़रूरत है", उसे कमजोर या डरपोक समझा जाता है, जबकि संशय और सवाल उठाना ही विचारशीलता की पहली निशानी होती है। दार्शनिक बर्ट्रेंड रसेल ने कहा था: "दुनिया की मुसीबत यह है कि मूर्ख पूरी तरह आश्वस्त हैं, और बुद्धिमान संदेह से भरे हैं।" आज आश्वस्त मूर्खों की फौज हर तरफ तैनात है, जो हर जटिल सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक मुद्दे का एक सीधा और सतही समाधान जेब में लेकर घूमती है। इस माहौल में विवेकशील चुप्पी या संतुलन की तलाश को वैचारिक शून्यता मान लिया जाता है, और उनके लिये रामधारी सिंह 'दिनकर' की प्राचीन कविता गाई जाने लगती है जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध। राजनीतिक लाभ और ध्रुवीकरण का गणित यह कराता है। ध्रुवीकरण स्वस्फूर्त नहीं होता है; इसे राजनीतिक और व्यावसायिक हित बाकायदा पालते-पोसते हैं। राजनीति के लिए लोगों को बांटना हमेशा से सबसे आसान और फायदेमंद सौदा रहा है। जब समाज हम बनाम वो में बंट जाता है, तो सरकारों और राजनीतिक दलों को अपनी वास्तविक विफलताओं पर जवाब नहीं देने का रास्ता मिल जाता है।चुनावी गणित इस बात पर आधारित नहीं रही है कि किसी ने जनता के लिए क्या किया, बल्कि वह इस बात पर आधारित हो गई है कि किसने अपनी वोट बैंक को दूसरे पक्ष के प्रति कितना डरा दिया है। सभी वाकिफ़ हैं कि भय और घृणा ध्रुवीकरण के चालक होते हैं। इस खेल में मध्यमार्गी और तटस्थ लोगों को सबसे बड़ा बाधक माना जाने लगा हैं, क्योंकि वे सवाल पूछते हैं। वे भावुकता के बजाय आंकड़ों पर बात करते हैं। इसलिए, दोनों तरफ की राजनीतिक ताकतें मिलकर सबसे पहले इस मध्यमार्ग को ध्वस्त करती हैं ताकि जनता के पास चुनने के लिए केवल दो ही छोर बचें।

दुनिया का इतिहास गवाह है कि जब-जब समाजों ने बारीकियों को खारिज करते हुए उन्माद का रास्ता चुना है, तब-तब विनाश ही हाथ लगा है। बीसवीं सदी के फासीवादी और अधिनायकवादी शासन इसी बाइनरी सोच की उपज थे, जहां राज्य से असहमति का मतलब सीधे देशद्रोह होता था। आज हमें उस इतिहास से सबक लेने की जरूरत है।

लोकतंत्र का मतलब केवल चुनाव जीतना या बहुमत हासिल करना नहीं होता है। लोकतंत्र की असली आत्मा सहमति की संस्कृति और अल्पमत के सम्मान में बसती है। लोकतंत्र इस सिद्धांत पर काम करता है कि कोई भी पक्ष पूर्ण सत्य का स्वामी नहीं हो सकता। संसद से लेकर सड़क तक, लोकतंत्र तभी फलता-फूलता है जब परस्पर विरोधी विचारों के बीच संवाद होता है, और उस संवाद से एक ऐसा रास्ता निकलता है जिसमें सबकी भलाई हो। लेकिन जब समाज पूरी तरह ध्रुवीकृत हो जाता है, तो संवाद की जगह मोनोलॉग या तू-तू मैं-मैं की बहस ले लेती है। ऐसे में लोग एक-दूसरे को समझने के लिए नहीं सुनते, बल्कि उसे नीचा दिखाने या उस पर पलटवार करने के लिए सुनते हैं। जब बातचीत के सारे पुल टूट जाते हैं और केवल वैचारिक दीवारें खड़ी रह जाती हैं, तो लोकतंत्र मात्र एक खोखला ढांचा बनकर रह जाता है। ऐसी स्थिति में समाज के विभिन्न वर्गों के बीच अविश्वास और नफरत की खाई इतनी गहरी हो जाती है, जिसे पाटना असंभव सा हो जाता है। नुएंसेस (बारीकियों) को बचाने की जरूरत आज जितनी है उतनी पहले कभी नहीं थी। दुनिया का इतिहास गवाह है कि जब-जब समाजों ने बारीकियों को खारिज करते हुए उन्माद का रास्ता चुना है, तब-तब विनाश ही हाथ लगा है। बीसवीं सदी के फासीवादी और अधिनायकवादी शासन इसी बाइनरी सोच की उपज थे, जहां राज्य से असहमति का मतलब सीधे देशद्रोह होता था। आज हमें उस इतिहास से सबक लेने की जरूरत है। स्याह और सफेद के बीच की जो धूसर (ग्रे) छायाएं हैं, वे दरअसल सहिष्णुता, करुणा, समझदारी और मानवता की छायाएं हैं। जीवन के अधिकांश सत्य इसी धूसर क्षेत्र में पाए जाते हैं। कोई भी इंसान पूरी तरह देवता या पूरी तरह दानव नहीं होता। इसी तरह, कोई भी व्यवस्था या विचार पूरी तरह त्रुटिहीन नहीं होता। मध्यमार्ग की पुनर्स्थापना के संकल्प का यह सही समय है। इस बात को ठीक से समझकर ही इस थोपे गए ध्रुवीकरण के खिलाफ खड़ा हुआ जा सकेगा। आज इस साहस को जुटाने की जरूरत है कि हम भारत के लोग सार्वजनिक रूप से कह सकें: "मैं इस बात से सहमत हूं, लेकिन उस बात से असहमत हूं।" उन्हें त्याज्य होने के डर से बाहर निकलना होगा। यदि निष्पक्ष और संतुलित रहने की कीमत पर समाज का एक बड़ा हिस्सा उन्हें छोड़ देता है, तो भी वह अकेलापन उस वैचारिक दासता से बेहतर है जहां नागरिक को किसी झुंड का हिस्सा बनने के लिए अपने विवेक की बलि देनी पड़ती है। बौद्धिक बिरादरी, मीडिया, नागरिक समाज और शिक्षण संस्थानों की यह सामूहिक जिम्मेदारी बनती है कि वे इस ग्रे ज़ोन को बचाए रखने के जतन करें। हमें एक ऐसा माहौल फिर से तैयार करना होगा जहां सवाल पूछने वाले को देशद्रोही न कहा जाए, और संशय व्यक्त करने वाले को विचारहीन न समझा जाए। स्याह और सफेद की यह जंग दुनिया को बेरंग और क्रूर बना देगी। सभी रंगों और छायाओं को बचाना अनिवार्य है। संवाद, संयम और समीक्षा का रास्ता ही वह मध्यमार्ग है, जो इस ध्रुवीकृत दौर में हमारे समाज को बिखरने से बचा सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

हाथी : इतिहास बनने से पहले

उमा व्यास

वर्ष 2023 में 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' को सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट फिल्म का ऑस्कर मिला। बोम्मन और बेल्ली की कहानी ने दुनिया को बताया कि मनुष्य और हाथी का रिश्ता केवल संरक्षण तक सीमित नहीं, बल्कि प्रेम, विश्वास और करुणा से भी जुड़ा है। अनाथ हाथी रघु की देखभाल की यह कहानी जितनी संवेदनशील है, उतना ही बड़ा प्रश्न भी छोड़ती है। उन बूढ़े, घायल और असहाय हाथियों का क्या, जिनका जीवन अपने अंतिम पड़ाव में भोजन, उपचार और सुरक्षित आश्रय की तलाश में बीत रहा है? जिस जीव को हमारी सभ्यता ने सदियों से पूजनीय माना, उसके वास्तविक जीवन के प्रति हमारी जिम्मेदारी क्या केवल श्रद्धा तक सीमित रहनी चाहिए?

12 अगस्त को विश्व हाथी दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2026 का संदेश है, ब्रिंगिंग द वर्ल्ड टुगेदर टू हेल्प एलिफेंट्स, अर्थात हाथियों की सहायता के लिए दुनिया को एकजुट करना। यह दिन हाथियों के प्रति प्रेम जताने भर का अवसर नहीं, बल्कि उस संकट को समझने का अवसर है जिसमें उनके जंगल सिकुड़ रहे हैं, प्राकृतिक रास्ते टूट रहे हैं और मानव तथा हाथी के बीच संघर्ष बढ़ रहा है।

हाथी परिवार का एक विशाल सदस्य मैमथ आज केवल इतिहास में बचा है। लगभग 4,000 वर्ष पहले पृथ्वी से उसकी अंतिम ज्ञात आबादी समाप्त हो गई। मैमथ की कहानी प्रकृति का एक संदेश है कि जब किसी जीव के अस्तित्व की परिस्थितियाँ लगातार बदलती हैं, तो उसका भविष्य भी सुरक्षित नहीं रहता। आज जीवित हाथियों के सामने भी यही चेतावनी खड़ी है। आज दुनिया में हाथियों की संख्या लाखों में है, लेकिन एशियाई हाथियों की वैश्विक जंगली आबादी 50,000 से कम मानी जाती है। भारत इस आबादी का सबसे बड़ा आश्रय है और वर्ष 2025 की पहली देशव्यापी डीएनए आधारित गणना में 22,446 जंगली एशियाई हाथी पाए गए। कर्नाटक भारत में हाथियों की सबसे बड़ी आबादी वाला राज्य है। संरक्षण की मानवीय कोशिशों का एक उदाहरण जामनगर का वंतारा भी है, जहाँ 260 से अधिक बचाए गए हाथियों की देखभाल की जा रही है।

हाथियों का जीवन जितना विशाल है, उतना ही रोचक भी। वे सामान्यत: 60 से 70 वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। उनका सामाजिक ढाँचा मातृसत्तात्मक होता है। झुंड की कमान प्राय: सबसे अनुभवी मादा हाथी के हाथ में होती है। वर्षों में संचित उसका अनुभव जलस्त्रोतों, सुरक्षित रास्तों और मौसम के बदलावों को समझने में पूरे झुंड का मार्गदर्शन करता है। नर हाथी बड़े होने पर प्राय: झुंड से अलग होकर स्वतंत्र जीवन जीने लगते हैं। जंगल में नेतृत्व का यह स्वरूप हमें प्रकृति की उस व्यवस्था से परिचित कराता है जहाँ अनुभव स्वयं एक शक्ति है।

हाथियों की दुनिया का एक अनोखा पहलू उनकी पाचन प्रक्रिया भी है। जंगलों का सिकुड़ना, सड़कें, रेलवे, खनन, कृषि और बढ़ती बस्तियाँ हाथियों के प्राकृतिक आवास को लगातार विभाजित कर रही हैं। उनके पारंपरिक रास्ते जब खेतों और बस्तियों में बदल जाते हैं, तो भोजन और पानी की तलाश में हाथियों का मनुष्यों से सामना होता है। यहीं से संघर्ष शुरू होता है और कई बार इसकी कीमत मनुष्य और हाथी दोनों को चुकानी पड़ती है। इसी चुनौती को देखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 1992 में प्रोजेक्ट एलिफेंट शुरू किया। आज देश में 33 हाथी अभयारण्य और 150 चिन्हित हाथी गलियारे हैं। फिर भी संरक्षण की सफलता केवल संरक्षित क्षेत्रों की संख्या से नहीं मापी जा सकती। असली प्रश्न यह है कि क्या हाथी अपने पारंपरिक रास्तों पर सुरक्षित चल पा रहे हैं, क्या उनके लिए पर्याप्त जंगल और जलस्त्रोत बचे हैं और क्या मनुष्य तथा हाथी के बीच सह अस्तित्व की राह बनाई जा रही है।

हाथियों के अस्तित्व पर मंडराता एक और पुराना खतरा है हाथीदाँत का अवैध व्यापार। हाथी के दाँत उसके शरीर का प्राकृतिक अंग हैं, लेकिन मनुष्य ने उन्हें लंबे समय तक धन और विलासिता की वस्तु बना दिया। भारत में वीरप्पन और उसके गिरोह ने दक्षिण भारत के जंगलों में हाथियों का बड़े पैमाने पर शिकार किया और हाथीदाँत की तस्करी की। उसका नाम भारत में वन्यजीवों के अवैध शिकार और हाथीदाँत के काले कारोबार के इतिहास से जुड़ गया।

यह संकट भारत तक सीमित नहीं रहा। अफ्रीका में भी हाथीदाँत के अवैध व्यापार ने हाथियों की आबादी पर भारी दबाव डाला। इसी पृष्ठभूमि में वन्यजीवों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार को नियंत्रित करने के लिए साइट्स अस्तित्व में आया। इसे वर्ष 1973 में अपनाया गया और वर्ष 1975 में लागू किया गया। वर्ष 1989 में अफ्रीकी हाथियों के हाथीदाँत के अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर कठोर नियंत्रण लागू किया गया। आज संरक्षण में डीएनए आधारित पहचान और फोरेंसिक जाँच जैसी वैज्ञानिक तकनीकें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। भारत में हाथी को वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के अंतर्गत कानूनी संरक्षण प्राप्त है। लेकिन कानून किसी प्रजाति को तभी बचा सकता है, जब उसके पीछे समाज की संवेदनशीलता और संरक्षण की वास्तविक इच्छा भी हो। हाथी के लिए जंगल बचाना, उसके गलियारे बचाना और स्थानीय समुदायों के साथ संतुलन बनाना इसी जिम्मेदारी का हिस्सा है।

भारत में हाथी केवल वन्यजीव नहीं, बल्कि हमारी आस्था और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। भगवान गणेश और ऐरावत से लेकर बौद्ध परंपराओं तक, हाथी को शक्ति, बुद्धि और समृद्धि का प्रतीक माना गया है। इसलिए हाथी की रक्षा केवल प्रकृति का संरक्षण नहीं, हमारी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान भी है। हाथी का महत्व उसके विशाल शरीर से कहीं अधिक है। वह बीजों के प्रसार में मदद करता है, वनस्पतियों की संरचना को प्रभावित करता है और जंगल में अनेक दूसरे जीवों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ बनाता है। वह जंगल का केवल निवासी नहीं, उसके पारिस्थितिकी तंत्र का सक्रिय निर्माता भी है। इसलिए एक हाथी को बचाना केवल एक जीव को बचाना नहीं, बल्कि पूरे जंगल के भविष्य को सुरक्षित करना है।

मैमथ इतिहास बन चुका है। हाथी अभी हमारे सामने है। सवाल यह नहीं कि हम हाथी को कितना पूजते हैं, सवाल यह है कि उसके लिए कितना बचाते हैं। क्या उसके जंगल बचेंगे? क्या उसके रास्ते खुले रहेंगे? क्या आने वाली पीढ़ियाँ उसे केवल किताबों और तस्वीरों में देखेंगी या अपने प्राकृतिक आवास में भी देख सकेंगी? मैमथ को हम वापस नहीं ला सकते, लेकिन हाथी को इतिहास बनने से बचाना अभी भी हमारे हाथ में है।

–उमा व्यास, आरएएस

प्रकृति की चेतावनी है असम की बाढ़

डॉ. मोनिका शर्मा

यदि हमने प्रकृति की इस चेतावनी को अब भी अनसुना किया और विकास की अंधी दौड़ में नदियों, जंगलों और पहाड़ों के प्राकृतिक संतुलन को नष्ट करना जारी रखा, तो वह समय दूर नहीं जब देश के अन्य हिस्सों को भी इसी तरह की विभीषिका का सामना करना पड़ेगा। हम प्रकृति पर विजय पाने की जिद छोड़कर प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व के सिद्धांत को अपनाएं।

देश के विभिन्न हिस्सों में हो रही अतिवृष्टि, विनाशकारी बाढ़ और जानलेवा भूस्खलन की घटनाएं बढ़ी हैं, जो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि देश एक गंभीर पर्यावरणीय संकट से गुजर रहा है। इस साल एक बार फिर असम भी भयावह बाढ़ की चपेट में है, जहां मरने वालों का आंकड़ा करीब सौ के करीब तक पहुंच गया है और लाखों लोग विस्थापित हुए हैं। यह संकट केवल एक राज्य की प्राकृतिक आपदा नहीं है, बल्कि बदलते वैश्विक पर्यावरण और मानवीय भूलों का एक साझा संकेत है, जो बार-बार प्रकृति की पूरे देश को दी जा रही एक गंभीर चेतावनी बन रहा है।

जलवायु परिवर्तन का बढ़ता प्रकोप कुछ यूं असरदार है कि मानसून का पारंपरिक चक्र बदल चुका है। कम समय में अचानक होने वाली अत्यधिक मूसलाधार बारिश की घटनाएं बढ़ गई हैं। जब एक साथ भारी मात्रा में पानी बरसता है, तो धरती को उसे सोखने का समय नहीं मिलता, जिससे मैदानी इलाकों में अचानक सैलाब आ जाता है। जो राज्य कभी पानी की कमी या सूखे के लिए जाने जाते थे (जैसे राजस्थान और गुजरात के कुछ हिस्से), आज वहां भी रिकॉर्ड तोड़ बारिश और बाढ़ देखी जा रही है। यह पर्यावरण के असंतुलन को दर्शाती है। अनियोजित विकास की सीमाएं भी इसकी जिम्मेदार बनी हैं जैसे नदियों के प्राकृतिक रास्तो में दखल और कमजोर इंफ्रास्ट्रक्चर। इसके कारण ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों के किनारे अनियोजित निर्माण और अतिक्रमण के कारण नदियों का फैलाव क्षेत्र सिमट गया है।

हाल के वर्षों में भारत ने साल के लगभग 99 फीसदी दिनों में किसी न किसी कोने में चरम मौसम का सामना किया है। यदि हमने प्रकृति की इस चेतावनी को अब भी अनसुना किया और विकास की अंधी दौड़ में नदियों, जंगलों और पहाड़ों के प्राकृतिक संतुलन को नष्ट करना जारी रखा, तो वह समय दूर नहीं जब देश के अन्य हिस्सों को भी इसी तरह की विभीषिका का सामना करना पड़ेगा। राष्ट्रीय बाढ़ आयोग के अनुसार, 1954 से असम में लगातार हर साल बाढ़ का संकट देखा जा रहा है, जिसमें 2020, 2022 और वर्तमान वर्ष 2026 की बाढ़ सबसे विनाशकारी रही है। वर्ष 2026 में अत्यधिक बारिश और ऊपरी जलग्राहण क्षेत्रों में बादल फटने से आई बाढ़ के कारण अब तक अनुमानित सौ से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। लाखों लोग प्रभावित हुए हैं तथा कई जिले हाई अलर्ट पर हैं।

दरअसल असम में दशकों पुराने तटबंध अब पानी के इस अप्रत्याशित दबाव को झेलने में सक्षम नहीं हैं। यह देश के अन्य हिस्सों के लिए भी चेतावनी है कि बिना वैज्ञानिक आधार के बनाए गए बांध या इंफ्रास्ट्रक्चर विनाश को निमंत्रण देते हैं। पड़ोसी पहाड़ी राज्यों (जैसे नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश) में बड़े पैमाने पर वनों की कटाई और अवैध खनन से मिट्टी का कटाव बढ़ा है। पहाड़ों से बहकर आने वाली गाद (मिट्टी) नदी के तल में जमा हो जाती है, जिससे नदियां उथली हो जाती हैं और थोड़ा सा पानी बढ़ते ही उफान पर आ जाती हैं। असल में असम की भौगोलिक स्थिति एक कटोरे के निचले हिस्से जैसी है, जहां ऊपर के पहाड़ी राज्यों में होने वाली किसी भी पर्यावरणीय छेड़छाड़ का सीधा असर असम के मैदानों पर पड़ता है। असम की बाढ़ पूरे देश के लिए सबक है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए अंतर-राज्यीय और समठा नीति का होना कितना ज़रूरी है। ग्लोबल क्लाइमेट रिस्क इंडेक्स 2026 के आंकड़ों के मुताबिक, भारत जलवायु खतरों से प्रभावित होने वाले शीर्ष देशों में शामिल है। इन आपदाओं के कारण आर्थिक व सामाजिक मोर्चे पर भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। इसमें पहला है कृषि पर संकट, दूसरा है जीडीपी को झटका, तीसरा है गरीबी और पलायन। इस तबाही का सबसे पहला और गहरा असर समाज के गरीब, दैनिक वेतन भोगी और हाशिए के लोगों पर पड़ता है, जिन्हें अपनी आजीविका खोकर विस्थापित होना पड़ता है।

हालिया परिदृश्य के बाद अब यह समय केवल आपदा के बाद राहत और बचाव कार्य तक सीमित रहने का नहीं है, बल्कि ठोस नीतिगत बदलाव करने का है। इसके तहत भारत मौसम विज्ञान विभाग को सटीक पूर्वानुमान प्रणाली अपनाते हुए अत्याधुनिक रडार और एआई-संचालित मौसम मॉडलों से लैस करना होगा ताकि क्लाउडबर्स्ट और फ्लैश फ्लड जैसी घटनाओं की समय रहते सटीक चेतावनी मिल सके। प्रकृति आधारित समाधान में पहाड़ी क्षेत्रों में स्थानीय और देसी वृक्षों का बड़े पैमाने पर वनीकरण किया जाए, जो मिट्टी को मजबूती से जकड़ कर रखते हैं।

इसके साथ ही ईको-सेंसिटिव जोन का सम्मान कर पर्यावरण के लिहाज से संवेदनशील क्षेत्रों (जैसे हिमालय और पश्चिमी घाट) में भारी निर्माण कार्यों और अनियंत्रित पर्यटन पर तुरंत कड़े प्रतिबंध लगाने होंगे। वहीं स्पंज सिटीज का निर्माण अपनाकर शहरी विकास में ऐसे डिजाइनों को शामिल करना होगा, जो वर्षा जल को सोख सकें और जलभराव की स्थिति न बनने दे। निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि बाढ़, अतिवृष्टि और भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाएं कोई आकस्मिक घटनाएं नहीं हैं, बल्कि यह प्रकृति द्वारा दिया जा रहा रेड अलर्ट है। यदि हमने विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाना नहीं सीखा, तो प्रगति की यह इमारत जल्द ही ढह सकती है। अब समय आ गया है कि हम प्रकृति पर विजय पाने की जिद छोड़कर प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व के सिद्धांत को अपनाएं।

–डॉ. मोनिका शर्मा,
वरिष्ठ पत्रकार

लंदन डायरी : दुनिया का खूबसूरत आइलैंड है 'ऑइल ऑफ वाइट'

दुनिया में कुछ आइलैंड ऐसे हैं, जहां की खूबसूरती देखकर हर ट्रैवलर इनकी और खींचा चला जाता है। साफ नीला समुद्र, सफेद रेत वाले बीच, हरे-भरे जंगल और अनोखी संस्कृति इन जगहों को खास बनाती है। इन आइलैंड्स को उनकी प्राकृतिक सुंदरता, बेहतरीन सुविधाओं और शानदार ट्रैवल एक्सपीरियंस के लिए दुनिया भर में पहचान मिली है। ऐसा ही एक ISLE OF WIGHT यानि ऑइल ऑफ वाइट इंग्लैंड के सबसे खूबसूरत आइलैंड में से एक है। आइल ऑफ वाइट इंग्लैंड के दक्षिणी तट पर स्थित है और अपने खूबसूरत समुद्र तटों और अन्य आकर्षणों के लिए प्रसिद्ध है। आइलैंड का मतलब जमीन का वह भाग जो चारों तरफ पानी से घिरा हो। ऐसा ही एक दीप ऑइल ऑफ वाइट है जो इंग्लॅण्ड के दक्षिण तट पर बसा एक बड़ा दीप है। इस दीप के चहुंओर इंग्लिश चैनल नामक समुद्र का पानी है। सदियों से लोग आइल ऑफ़ वाइट घूमने आते रहे हैं। महारानी विक्टोरिया को यह द्वीप बहुत पसंद था और उनका गर्मियों का घर, ऑस्बोर्न हाउस, आज भी पर्यटकों के लिए खुला है। उनके संरक्षण की वजह से यह द्वीप पर्यटकों के बीच बहुत लोकप्रिय हो गया।

हमने सपरिवार इस दीप के भ्रमण का कार्यक्रम बनाया। सड़क से जुड़ा नहीं होने के कारण पहले हम साउथ लंदन के अपने घर से लगभग 120 किमी दूर PORTSMOUTH नामक बंदरगाह पहुंचे जहाँ से फेरी यानि पानी के जहाज से लगभग चालीस मिनट में FISHBOURNE बंदरगाह पहुंचे। हमारे पास दो

गाड़ियां थी। एक PORTSMOUTH पार्किंग में रखी और दूसरी जहाज में हमारे साथ थी। जहाज के डेक का आनंद उठाते हुए FISHBOURNE बंदरगाह से अपनी कार से नीडल्स शहर और कुछ अन्य शहरों का भ्रमण करते हुए SHANKLIN नामक शहर के एक होटल पहुंचे जो समुद्र के किनारे बीच पर स्थित है।

पहले बात करते हैं नीडल्स शहर की। यह इस दीप की सबसे फेमस जगह है। यहाँ समुद्र से तीस मीटर ऊँची सफ़ेद चाक की तीन चट्टानें है जो पानी में सुई की तरह खड़ी है। चटानों के आखिर में 1860 में बना लाइट हाउस है। पर्यटक यहाँ 120 मीटर ऊँची पहाड़ी के नज़ारे देखने के लिए पैदल या बस से जाते है। नीडल्स में इटली के वैज्ञानिक मारकोनी ने 1897 में दुनिया का पहला वायरलेस टेलीग्राफ स्टेशन स्थापित किया था। नेशनल म्यूजियम ट्रस्ट द्वारा संचालित स्टेशन अब नीडल्स ओल्ड बैटरी का एक भाग है। 1903 में पहली बार जहाज पर यहाँ से वायर लेस सन्देश भेजा गया था। उस समय की ये सबसे बड़ी घटना थी। यह स्टेशन 137 मीटर ऊँचे क्लिफ के ऊपर बना है। नीडल्स का वायर लेस स्टेशन अब ओल्ड बैटरी के अंदर म्यूजियम का हिस्सा है। 1960 के बाद टेक्नोलोजी बदलने से यह स्टेशन बंद हो गया। यहाँ अब पुराने टेलीग्राफ मशीन और एंटीना के अवशेष रखे है।

नीडल्स के भ्रमण के बाद SHANKLIN पहुंचे जहाँ होटल में विश्राम के बाद दूसरे दिन बीच का आनंद उठाया। ये एक किमी लम्बा ऑइल ऑफ वाइट का सबसे बढ़िया, साफ़ और खूबसूरत बीच है। यहां उठती समुद्री तरंगे और उफनता समुद्र मन को तरोताजा कर देता है। इसका प्राकृतिक दृश्य मन मोह लेने वाला है। वास्तव में यहां का मनोरम दृश्य तुलना से परे है। अच्छे मौसम ने हमें समुद्र में उतर कर नहाने, तैरने और अठखेलियां करने का अवसर प्रदान कर दिया।

–बाल मुकुंद ओझा,
वरिष्ठ लेखक और पत्रकार

"विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की शून्य उपस्थिति : एक ऐतिहासिक उपलब्धि!"

"यह अत्यंत गौरव का विषय है कि हमारे उच्च शिक्षण संस्थानों ने शिक्षकों से पूरी तरह मुक्ति पा ली है। अब न कोई वेतन का खर्च है, न ही फैकल्टी की गुटबाजी। छात्र अब पूरी तरह से स्वतंत्र हैं। दीक्षांत समारोहों को इतना आधुनिक बना दिया गया है कि अब उसमें छात्रों की उपस्थिति की आवश्यकता ही नहीं रही। केवल डिजिटल स्क्रीन पर नाम चमका दिए जाते हैं। यह तकनीक और आत्मनिर्भरता का वह संगम है, जिसकी कल्पना भी पश्चिमी देश नहीं कर सकते!"

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 12 अगस्त, 2026

सावन मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, बुधवार, विक्रम संवत 2083, पुष्य नक्षत्र प्रात: 8:00 तक, व्यतिपात योग दिन 3:26 तक, चतुष्पद करण दिन 12:30 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-कर्क, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज देवपितृकार्य अमावस्या, हरियाला अमावस्या, सरस माधुरी जयन्ती, व्यतिपात पुण्यं, चितलगी अमावस्या, करकट पूजा है। आज आखिरी चादर शम्ब और शहदते इमाम हसन है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:16 तक, शुभ 10:54 से 12:32 तक, चर 3:48 से 5:25 तक, लाभ 5:25 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 7:03

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि हो सकती है। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से संपर्क बनेंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना बनेगी। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर में महत्वपूर्ण कार